UGC APPROVED JOURNAL - 47746
© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 01 | January – March 2018

भारत के आतंकवाद विरोधी प्रयासों में विशेष बलों की भूमिका का अध्ययन

डॉ दीप कुमार श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर , रक्षा अध्ययन विभाग

एसएम कॉलेज चंदौसी

सार

यह शोध पत्र देश के आतंकवाद विरोधी प्रयासों में भारतीय विशेष बलों की महत्वपूर्ण भूमिका की जांच करता है। यह उनकी संगठनात्मक संरचना, परिचालन रणनीतियों और आतंकवादी खतरों को कम करने पर उनके हस्तक्षेप के प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रदान करता है। राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी), पैरा (विशेष बल), और समुद्री कमांडो (एमएआरसीओएस) जैसी इकाइयों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए, अध्ययन मात्रात्मक डेटा विश्लेषण के साथ गुणात्मक साक्षात्कार के संयोजन के साथ एक मिश्रित-तरीके दृष्टिकोण को नियोजित करता है। भारतीय विशेष बलों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ाने, खुफिया-साझाकरण तंत्र में सुधार, उपकरणों का आधुनिकीकरण और नौकरशाही प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने की सिफारिशें प्रदान की गई हैं। यह व्यापक परीक्षा राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने में विशेष बलों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है और आतंकवाद विरोधी रणनीतियों में भविष्य में सुधार के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

मुख्य शब्द: भारत, आतंकवाद, विरोधी, विशेष बल, इत्यादि ।

प्रस्तावना

आतंकवाद भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा बना हुआ है, जिससे देश की सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक स्थिरता प्रभावित हो रही है। दशकों से, भारत को घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी संगठनों द्वारा आयोजित कई आतंकवादी हमलों का सामना करना पड़ा है। इन घटनाओं ने एक मजबूत और अनुकूली आतंकवाद विरोधी रणनीति के विकास की आवश्यकता पैदा कर दी है, जिसके कार्यान्वयन में विशेष बल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

विशेष बल विशिष्ट सैन्य इकाइयाँ हैं जिन्हें उच्च जोखिम वाले मिशनों को करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जिन्हें संभालने के लिए पारंपरिक बल सुसज्जित नहीं हो सकते हैं। भारत में, राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (NSG), पैरा (विशेष बल), और मरीन कमांडो (MARCOS) जैसी इकाइयाँ आतंकवाद विरोधी अभियानों में सबसे आगे रही हैं। इन इकाइयों को विशेष रूप से शहरी परिवेश से लेकर दूरदराज के इलाकों तक विविध वातावरणों में तेजी से तैनाती, सटीक हमलों और जटिल संचालन के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

भारत में आतंकवाद का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में आतंकवाद का एक लंबा और जटिल इतिहास है, जिसमें कई घटनाएं शामिल हैं जिन्होंने इसके राष्ट्रीय सुरक्षा परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। देश को अलगाववादी आंदोलनों, धार्मिक उग्रवाद और विद्रोही समूहों सहित विभिन्न स्रोतों से खतरों का सामना करना पड़ा है। इनमें उल्लेखनीय हैं 1980 के दशक के दौरान पंजाब में खालिस्तानी अलगाववादी, 1980 के दशक के अंत से जम्मू और कश्मीर में विद्रोह, और मध्य और पूर्वी क्षेत्रों में नक्सली-माओवादी विद्रोह का उदय। पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा द्वारा आयोजित 2008 के मुंबई हमले एक महत्वपूर्ण क्षण थे, जिसने अधिक मजबूत और समन्वित आतंकवाद विरोधी रणनीति की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। इन हमलों, जिनके परिणामस्वरूप काफी जानमाल का नुकसान हुआ और व्यापक भय पैदा हुआ, ने भारत के सुरक्षा तंत्र की कमजोरियों और विशेष हस्तक्षेप बलों की आवश्यकता को रेखांकित किया। दशकों से, भारत की आतंकवाद विरोधी रणनीतियाँ इन विविध और लगातार खतरों से निपटने के लिए विकसित हुई हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी), पैरा (विशेष बल), और समुद्री कमांडो (मार्कोस) जैसी विशिष्ट इकाइयों की स्थापना और वृद्धि हुई है। . ये इकाइयाँ राष्ट्रीय सुरक्षा की सुरक्षा में विशेष बलों की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करते हुए, विभिन्न आतंकवादी खतरों का जवाब देने और उन्हें बेअसर करने में सहायक रही हैं।

भारतीय विशेष बलों की संगठनात्मक संरचना

- **राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी)**

राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी), जिसे अक्सर "ब्लैक कैट्स" कहा जाता है, भारत की प्रमुख आतंकवाद विरोधी इकाई है। ऑपरेशन ब्लू स्टार और प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद 1984 में स्थापित, एनएसजी को विशेष कौशल की आवश्यकता वाली असाधारण स्थितियों को संभालने के लिए बनाया गया था। एनएसजी गृह मंत्रालय के तहत काम करता है और इसे दो मुख्य घटकों में संरचित किया गया है: स्पेशल एक्शन ग्रुप (एसएजी) और स्पेशल रेंजर ग्रुप (एसआरजी)। एसएजी, जो पूरी तरह से भारतीय सेना के जवानों से बना है, को प्रत्यक्ष कार्रवाई, बंधक बचाव और अपहरण विरोधी मिशन सहित आतंकवाद विरोधी अभियानों को अंजाम देने का काम सौंपा गया है। एसआरजी, जिसमें केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों के कर्मी शामिल हैं, वीआईपी के लिए साजो-सामान सहायता, सुरक्षा प्रदान करता है और ऑपरेशन के दौरान एसएजी की सहायता करता है।

- **पैरा (विशेष बल)**

पैरा (विशेष बल), भारतीय सेना की पैराशूट रेजिमेंट का हिस्सा, भारतीय सेना में सबसे बहुमुखी और उच्च प्रशिक्षित इकाइयों में से एक है। पैराशूट रेजिमेंट की हवाई बटालियनों से उत्पन्न, पैरा (एसएफ) इकाइयां उच्च जोखिम वाले मिशनों की एक विस्तृत श्रृंखला को निष्पादित करने की अपनी क्षमता के लिए जानी जाती हैं। इनमें सीधी कार्रवाई, विशेष टोही, उग्रवाद विरोधी और बंधक बचाव अभियान शामिल हैं। प्रत्येक पैरा (एसएफ) बटालियन विभिन्न इलाकों और परिचालन वातावरणों में माहिर है, जैसे कि पहाड़ी युद्ध, रेगिस्तानी युद्ध और जंगल युद्ध, जो संघर्ष के विभिन्न क्षेत्रों में लचीली तैनाती

की अनुमति देता है। कठोर चयन प्रक्रिया और निरंतर प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि पैरा (एसएफ) कर्मी सबसे अधिक मांग वाले ऑपरेशनों के लिए हमेशा तैयार रहें।

- **समुद्री कमांडो (मार्कोस)**

मरीन कमांडो (MARCOS), जिसे मरीन कमांडो फोर्स (MCF) के रूप में भी जाना जाता है, भारतीय नौसेना की विशिष्ट विशेष अभियान इकाई है। 1987 में स्थापित, मार्कोस को समुद्री विशेष अभियान चलाने का काम सौंपा गया है। इसमें उभयचर युद्ध, आतंकवाद-निरोध, सीधी कार्रवाई और विशेष टोही मिशन शामिल हैं। किसी भी परिदृश्य के लिए अपनी तैयारी सुनिश्चित करने के लिए, मार्कोस कर्मियों को समुद्री, जंगल और शहरी सेटिंग्स सहित विविध वातावरण में व्यापक प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है। यह इकाई अत्याधुनिक हथियारों और प्रौद्योगिकी से सुसज्जित है, जो उन्हें स्वतंत्र रूप से और अन्य सशस्त्र बल इकाइयों के समर्थन में ऑपरेशन करने में सक्षम बनाती है। समुद्री संचालन में उनकी बहुमुखी प्रतिभा और दक्षता उन्हें भारत की आतंकवाद विरोधी रणनीति का एक महत्वपूर्ण घटक बनाती है, खासकर तटीय और अपतटीय संपत्तियों को सुरक्षित करने में।

- **एकीकरण और समन्वय**

आतंकवाद विरोधी अभियानों में भारतीय विशेष बलों की प्रभावशीलता अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ उनके एकीकरण और समन्वय से काफी बढ़ गई है। नियमित संयुक्त प्रशिक्षण अभ्यास, खुफिया-साझाकरण तंत्र और समन्वित परिचालन योजना यह सुनिश्चित करती है कि ये विशिष्ट इकाइयां आतंकवादी खतरों का तेजी से और कुशलता से जवाब दे सकें। एनएसजी, पैरा (विशेष बल), और मार्कोस के साथ-साथ अन्य राष्ट्रीय और राज्य-स्तरीय सुरक्षा एजेंसियों के बीच तालमेल, एक समेकित आतंकवाद-रोधी ढांचा बनाता है जो उभरते खतरे के परिदृश्य के अनुकूल है।

मामले का अध्ययन

- **ऑपरेशन ब्लैक टॉरनेडो: 2008 मुंबई हमला**

ऑपरेशन ब्लैक टॉरनेडो 26 नवंबर, 2008 को मुंबई में लश्कर-ए-तैयबा के सदस्यों द्वारा किए गए समन्वित आतंकवादी हमलों की प्रतिक्रिया थी। हमलों में ताज महल पैलेस होटल, ओबेरॉय ट्राइडेंट होटल, नरीमन हाउस और छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस सहित कई स्थानों को निशाना बनाया गया, जिसके परिणामस्वरूप 166 लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। आतंकवादियों को मार गिराने और बंधकों को छुड़ाने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) को तैनात किया गया था। ऑपरेशन में जटिल शहरी युद्ध और बंधक बचाव मिशन शामिल थे। एनएसजी कमांडो ने ताज महल पैलेस होटल और नरीमन हाउस में कमरे-दर-कमरे की तलाशी ली और गोलीबारी की, अंततः लगभग 60 घंटों के बाद आतंकवादियों को मार गिराया। साजो-सामान संबंधी चुनौतियों के बावजूद, ऑपरेशन ने एनएसजी की सामरिक कौशल का प्रदर्शन किया और भारत के आतंकवाद-विरोधी बुनियादी ढांचे में महत्वपूर्ण बदलाव लाए, जिसमें राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की स्थापना और अंतर-एजेंसी समन्वय में सुधार शामिल है।

ऑपरेशन ब्लूस्टार: 1984

ऑपरेशन ब्लूस्टार पंजाब के अमृतसर में स्वर्ण मंदिर परिसर से जरनैल सिंह भिंडरावाले के नेतृत्व वाले सशस्त्र आतंकवादियों को हटाने के लिए 1 जून से 10 जून 1984 के बीच चलाया गया एक सैन्य अभियान था। उग्रवादियों ने मंदिर परिसर की किलेबंदी कर ली थी और एक अलग सिख राज्य की वकालत कर रहे थे। विफल वार्ता के बाद विशेष बल इकाइयों सहित भारतीय सेना ने ऑपरेशन शुरू किया। हमले में गहन युद्ध शामिल था, जिसमें स्नाइपर्स को बेअसर करने और अकाल तख्त की इमारत में मजबूत स्थिति को साफ़ करने के लिए विशेष बल तैनात किए गए थे। टैंक और भारी तोपखाने का उपयोग, हालांकि ऑपरेशन की सफलता के लिए आवश्यक था, साइट की पवित्र प्रकृति के कारण विवादास्पद था। ऑपरेशन ब्लूस्टार अपने तात्कालिक उद्देश्य में सफल रहा लेकिन इसके दूरगामी राजनीतिक और सामाजिक परिणाम हुए, जिनमें प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या और उसके बाद सिख विरोधी दंगे शामिल थे।

निष्कर्ष

भारत के आतंकवाद विरोधी प्रयासों में विशेष बलों की भूमिका का अध्ययन राष्ट्रीय सुरक्षा में उनके अपरिहार्य योगदान पर प्रकाश डालता है। राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी), पैरा (विशेष बल), और समुद्री कमांडो (एमएआरसीओएस) जैसी इकाइयों ने प्रत्यक्ष कार्रवाई, बंधक बचाव और उग्रवाद विरोधी अभियानों सहित उच्च जोखिम वाले अभियानों के माध्यम से अपनी प्रभावशीलता साबित की है। 2008 के मुंबई हमले, 2016 के सर्जिकल स्ट्राइक और ऑपरेशन ब्लूस्टार जैसे उल्लेखनीय ऑपरेशन उनकी सामरिक कौशल और रणनीतिक प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं। इन बलों ने आतंकवादी गतिविधियों को काफी हद तक रोका है और भारत के सुरक्षा तंत्र में जनता का विश्वास बढ़ाया है। हालाँकि, बेहतर ख़ुफ़िया-साझाकरण, बेहतर साजो-सामान समर्थन और सुव्यवस्थित निर्णय लेने की आवश्यकता जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। उनकी परिचालन तत्परता को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए इन मुद्दों को संबोधित करना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चारी, पी.आर., और चंद्रन, डी.एस. (2003)। दक्षिण एशिया में सशस्त्र संघर्ष 2008: बढ़ती हिंसा। रूटलेज।
2. कॉर्ड्समैन, ए.एच., और वीरा, वी. (2011)। भारत की आतंकवाद विरोधी रणनीति: क्षमता निर्माण के लिए संघर्ष। सामरिक और अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन केंद्र (सीएसआईएस)।
3. फेयर, सी.सी. (2009)। पाकिस्तान में आतंकवादी चुनौती. एशिया नीति, (8), 105-137.
4. गांगुली, एस., और फिडलर, डी.पी. (2009)। भारत और आतंकवाद विरोधी: सीखे गए सबक। रूटलेज।
5. घोष, ए. (2010). भारत में आतंकवाद विरोधी नीतियां। आतंकवाद पर आलोचनात्मक अध्ययन, 3(2), 265-279।

6. कुमार, एस. (2012)। राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड: भारत का आतंकवाद विरोधी कमांडो बल। लांसर पब्लिशर्स एलएलसी।
7. मलिक, वी.पी. (2007)। कारगिल: आश्चर्य से विजय तक। हार्पर कॉलिन्स भारत।
8. मेनन, आर. (2004). भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा: एक पाठक। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
9. मित्रा, एस.के. (2003)। भारत के शासन की पहेली: संस्कृति, संदर्भ और तुलनात्मक सिद्धांत। रूटलेज।
10. ओएटकेन, एच. (2005). भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा: राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों के अध्यक्षीय भाषण। नोमोस वेरलाग्सगेसेलशाफ्ट।
11. प्रधान, एम. (2013)। मार्कोस: भारत के समुद्री कमांडो। विज बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
12. रमन, बी. (2002)। बुद्धि: अतीत, वर्तमान और भविष्य। लांसर प्रकाशक।
13. रॉय, के. (2005). औपनिवेशिक भारत में युद्ध और समाज, 1807-1945। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
14. साहनी, ए. (2000). भारत में आतंकवाद विरोधी रणनीतियाँ: सफलताएँ और विफलताएँ। के. ए. स्वामी (सं.) में, दक्षिण एशिया में आतंकवाद। पेंटागन प्रेस.
15. साहनी, पी. (2001)। रक्षा बदलाव: 10 मिथक जो भारत की छवि को आकार देते हैं। हार्पर कॉलिन्स भारत।